eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

[1]डा0 प्रियंका रानी
[1]सहायक प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Abstract

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श का उदय एक सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिवर्तन का परिणाम है, जो महिलाओं की स्थिति, अधिकार और अस्तित्व को केंद्र में लाता है। यह शोधपत्र हिंदी कथाओं के माध्यम से स्त्री चेतना, संघर्ष, आत्माभिव्यक्ति और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ उनके विद्रोह की पड़ताल करता है। प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग और अन्य प्रमुख लेखकों की रचनाओं में स्त्री विषयक दृष्टिकोण का समग्र विश्लेषण इस शोध में किया गया है। शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि कैसे हिंदी कथा साहित्य ने स्त्री के यथार्थ को स्वर दिया और भारतीय समाज में स्त्री की नई पहचान की रचना की।

प्रमुख शब्द– स्त्री विमर्श, हिंदी कथा साहित्य, नारी चेतना, सामाजिक असमानता, स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री अस्मिता, पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था, आत्माभिव्यक्ति, यथार्थवाद।

Introduction

स्त्री विमर्श एक ऐसा सामाजिक और साहित्यिक आंदोलन है, जिसने परंपरागत सोच, रुढ़ियों और सामाजिक असमानताओं को चुनौती दी है। यह विमर्श स्त्री की अस्मिता, अस्तित्व और अधिकारों की पुनः परिभाषा करता है। स्त्री विमर्श का मूल उद्देश्य न केवल स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का मूल्यांकन करना है, बल्कि उन्हें स्वतंत्र व्यक्तित्व और आत्मनिर्भर अस्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित करना भी है। हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श की शुरुआत बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में होती है, जब प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने सामाजिक यथार्थ को अपने साहित्य में स्थान दिया। इसके बाद प्रगतिशील आंदोलन, नई कहानी आंदोलन और समकालीन स्त्री लेखन ने इस विमर्श को और अधिक व्यापक और गहन बनाया। स्त्रियाँ अब केवल संवेदनशील पात्र नहीं रहीं, बल्कि वे कथा की केंद्रबिंदु बनकर अपने अधिकारों, इच्छाओं और संघर्षों को स्वर देने लगीं। यह शोधपत्र स्त्री विमर्श की अवधारणा को हिंदी कथा साहित्य में विश्लेषित करता है और विभिन्न लेखकों की रचनाओं के माध्यम से यह जानने का प्रयास करता है कि किस प्रकार स्त्री पात्रों के माध्यम से समाज में व्याप्त लैंगिक भेदभाव, पितृसत्तात्मक मानसिकता और स्त्री की अस्मिता के प्रश्नों को उठाया गया है। स्त्री विमर्श केवल नारी केंद्रित दृष्टिकोण नहीं है, यह सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों की स्थापना की दिशा में एक सशक्त हस्तक्षेप है। हिंदी कथा साहित्य, विशेषकर कहानियाँ और उपन्यास, इस विमर्श के लिए अत्यंत प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हुए हैं।

अतः इस शोध में यह समझने का प्रयास किया गया है कि हिंदी कथा साहित्य में स्त्री किस प्रकार चित्रित हुई है एक माँ, पत्नी, प्रेमिका, विद्रोही, स्वाधीन व्यक्तित्व और कभी–कभी हाशिए पर धकेली गई इकाई के रूप में। साथ ही यह भी विश्लेषित किया गया है कि कैसे विभिन्न कालखंडों में लेखकों की दृ ष्टि में परिवर्तन आया है और स्त्री विमर्श ने साहित्यिक भाषिक संरचना को किस रूप में प्रभावित किया है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

2. स्त्री विमर्श का वैचारिक परिप्रेक्ष्य– स्त्री विमर्श का वैचारिक आधार पितृसत्ता विरोध, लैंगिक समानता और स्त्री की अस्मिता की पुनः परिभाषा में निहित है। यह विमर्श केवल स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को लेकर ही नहीं, बल्कि उनके मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पक्षों को भी समाहित करता है। स्त्री विमर्श का उद्‌भव पश्चिमी नारीवादी आंदोलनों से प्रेरित होकर हुआ, लेकिन भारतीय संदर्भ में इसके सरोकार भिन्न और विशिष्ट हैं। भारतीय स्त्री विमर्श का प्रमुख स्वर यह है कि स्त्री को केवल उपेक्षित या पीड़ित के रूप में चित्रित न किया जाए, बल्कि उसे एक स्वतंत्र सोच, संवेदना और आत्माभिव्यक्ति वाली इकाई के रूप में देखा जाए। हिंदी साहित्य में यह विमर्श धीरे–धीरे विकसित हुआ है, और इसमें विविध वैचारिक धाराएँ उभरकर सामने आई हैं जैसे उदार नारीवाद, समाजवादी नारीवाद, दलित नारीवाद, उत्तर–आधुनिक स्त्री विमर्श आदि। उदार नारीवाद स्त्रियों की शिक्षा, संपत्ति और वैधानिक अधिकारों की बात करता है, जबकि समाजवादी स्त्री विमर्श का केंद्र पूंजीवादी संरचनाओं में स्त्रियों के शोषण पर है। वहीं दलित स्त्री विमर्श ब्राह्मणवादी और पितृसत्तात्मक दोहरे शोषण को रेखांकित करता है। उत्तर–आधुनिक विमर्श स्त्री की पहचान, भाषा और प्रतीकों के माध्यम से उसकी भूमिका को पुनर्परिभाषित करता है।

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श का विकास इन सभी धाराओं के प्रभाव में हुआ है। प्रेमचंद की कहानियों में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की झलक मिलती है, लेकिन मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, और मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में स्त्री के आंतरिक संघर्ष, आकांक्षाएँ और विद्रोही चेतना स्पष्ट रूप से सामने आती है। स्त्री विमर्श के वैचारिक पक्ष में सिमोन द बोउवार की 'The Second Sex', बेल हुक्स की 'Feminist Theory: From Margin to Center' और गायत्री चक्रवर्ती स्पिवक की 'Can the Subaltern Speak\' जैसी कृतियों का वैश्विक प्रभाव स्पष्ट है। हिंदी में प्रभा खेतान, रमणिका गुप्ता और सुधा अरोड़ा जैसी लेखिकाओं ने इन विचारों को भारतीय समाज के अनुरूप प्रस्तुत किया। इस खंड का निष्कर्ष यह है कि स्त्री विमर्श एक स्थिर विचारधारा नहीं है, बल्कि यह एक सतत विकसित होती चेतना है, जो सामाजिक संरचनाओं, सत्ता संबंधों और सांस्कृतिक प्रतीकों की गहराई से पड़ताल करती है। हिंदी कथा साहित्य में इस विमर्श का स्थान न केवल स्त्री की उपस्थिति को सुनिश्चित करता है, बल्कि उसे विचार, भाव और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी प्रदान करता है।

3. हिंदी कथा साहित्य में प्रारंभिक स्त्री चित्रण– हिंदी कथा साहित्य के प्रारंभिक दौर में स्त्री का चित्रण सीमित, परंपरागत और अक्सर त्यागमयी एवं सहनशील भूमिकाओं तक सीमित रहा। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में जब कथा साहित्य ने अपने पाँव पसारने शुरू किए, तब समाज में स्त्री की स्थिति मुख्यतः एक संस्कारी, समर्पित और पुरुष की छाया में रहने वाली इकाई के रूप में प्रस्तुत की जाती थी। इस युग के साहित्य में स्त्री चरित्रों को अधिकतर परिवार, विवाह और मातृत्व की भूमिकाओं तक सीमित रखा गया। प्रेमचंद हिंदी कथा साहित्य के उस दौर के प्रमुख हस्ताक्षर थे, जिन्होंने सामाजिक यथार्थ को साहित्य में जगह दी। उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री पात्रों को एक संवेदनशील दृष्टि से देखा गया। शनिर्मलाश उपन्यास में उन्होंने बाल विवाह, स्त्री शिक्षा की कमी और विवाह संस्था के अन्यायपूर्ण स्वरूप को उजागर किया। निर्मला एक ऐसी पात्र है जो परिस्थितियों की शिकार है, परंतु उसके माध्यम से प्रेमचंद ने सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया। इसी प्रकार, सेवासदन की सुधा स्त्री की नैतिकता, आत्मग्लानि और आत्मनिर्भरता की जटिलताओं को अभिव्यक्त करती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

प्रारंभिक लेखन में स्त्री की छवि विरोध करने वाली नहीं बल्कि सहन करने वाली के रूप में उभरती है। यह यथार्थ उस समय की सामाजिक संरचना और स्त्री के लिए उपलब्ध सीमित अवसरों को दर्शाता है। तथापि, यह भी सत्य है कि इन पात्रों के माध्यम से लेखकों ने एक संवेदना, करुणा और सहानुभूति के साथ स्त्री की स्थिति को रेखांकित किया। उस युग की अन्य लेखिकाएँ, जैसे शिवानी या महादेवी वर्मा, ने भी अपनी रचनाओं में स्त्रियों के अंतःसंघर्ष, भावनात्मक द्वंद्व और सामाजिक असमानताओं को चित्रित किया। महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़ियाँ जैसी आत्मकथात्मक रचनाएँ स्त्री की आंतरिक पीड़ा और उसकी मौन चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। इस कालखंड में स्त्री विमर्श अपने आरंभिक स्वरूप में था, लेकिन इसमें पहले से ही स्त्री की अस्मिता, उसकी इच्छाओं और सामाजिक बंधनों के विरोध के बीज विद्यमान थे। प्रारंभिक हिंदी कथा साहित्य ने एक बुनियादी ज़मीन तैयार की जिस पर आगे चलकर प्रगतिशील और समकालीन लेखकों ने स्त्री विमर्श को विकसित किया।

4. प्रगतिशील लेखन और स्त्री विमर्श– प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना 1936 में एक ऐसे आंदोलन के रूप में हुई, जिसका उद्देश्य समाज में व्याप्त शोषण, असमानता और रूढ़ियों को तोड़ना था। इस आंदोलन ने साहित्य को एक सामाजिक उपकरण माना, जिसके माध्यम से जनजागरण और क्रांति लाई जा सकती थी। स्त्री विमर्श इस आंदोलन का एक केंद्रीय पक्ष नहीं था, किंतु इसने स्त्री विषयक लेखन को एक नई दिशा प्रदान की। प्रेमचंद, जो इस आंदोलन के प्रारंभिक प्रेरक थे, ने 'सेवासदन', 'गबन' और 'निर्मला' जैसे उपन्यासों में स्त्री के जीवन, पीड़ा और सामाजिक द्वंद्व को साहित्यिक विमर्श में लाया। हालांकि उनके पात्रों में विद्रोह कम और सहनशीलता अधिक थी, लेकिन उनके लेखन ने आने वाली पीढ़ी के लेखकों के लिए स्त्री चेतना के द्वार खोले।

प्रगतिशील स्त्री लेखकों में मन्नू भंडारी, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, और मोहन राकेश जैसे लेखकों ने भी स्त्री पात्रों को पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकालने का प्रयास किया। मन्नू भंडारी की कहानी **यही सच है** में एक शिक्षित, आत्मनिर्भर और निर्णय लेने वाली नायिका की छवि सामने आती है, जो अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वतंत्रता का चयन करती है। राजेंद्र यादव की कहानियाँ भी स्त्री के भीतर की द्वंद्वात्मकता को उजागर करती हैं, यद्यपि उनकी दृष्टि कभी–कभी पुरुष–प्रधान भी प्रतीत होती है। परंतु यह भी सच है कि प्रगतिशील लेखन ने स्त्री को साहित्य के केंद्र में लाने का साहस दिखाया, जो पहले केवल एक पृष्ठभूमि पात्र होती थी। महिलाओं के पक्ष में खड़ी लेखिकाओं में महाश्वेता देवी का योगदान भी उल्लेखनीय है। उन्होंने आदिवासी और दलित स्त्रियों की पीड़ा, संघर्ष और विद्रोह को अपने कथा साहित्य में स्वर दिया। उनकी रचनाएँ नारी विमर्श को केवल शहरी मध्यवर्गीय दायरे में सीमित नहीं रखतीं, बल्कि सामाजिक वर्ग और जाति के प्रश्नों से भी जोड़ती हैं।

प्रगतिशील लेखन की सबसे बड़ी देन यह रही कि इसने स्त्री को केवल संवेदनशील प्राणी नहीं बल्कि सामाजिक सत्ता संरचना से जूझती, प्रतिरोध करती और अपने अस्तित्व के लिए लड़ती हुई इकाई के रूप में प्रस्तुत किया। इस आंदोलन ने स्त्री विमर्श को वैचारिक और सामाजिक जमीन दी, जिस पर आगे चलकर नई कहानी और समकालीन लेखन ने सघन विमर्श खड़ा किया।

5. नई कहानी और स्त्री विमर्श– नई कहानी आंदोलन हिंदी साहित्य में 1950 और 60 के दशक में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक धारा के रूप में उभरा, जिसने यथार्थवाद, व्यक्ति की आंतरिक संवेदनाओं और सामाजिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

जटिलताओं को केंद्र में रखा। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के मनोविज्ञान, सामाजिक द्वंद्व और उसकी अस्मिता की खोज करना था। नई कहानी ने स्त्री को केवल एक सामाजिक प्राणी के रूप में नहीं देखा, बल्कि एक जटिल, संवेदनशील और संघर्षशील इकाई के रूप में प्रस्तुत किया। इस दौर के लेखकों ने स्त्री पात्रों को एक नई दृष्टि से देखना शुरू किया। वे अब केवल सहनशील पत्नी, त्यागमयी माँ या प्रेमिका के रूप में सीमित नहीं रहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, यौन स्वतंत्रता, भावनात्मक जटिलताओं और सामाजिक विरोधाभासों से जूझती हुई स्त्रियाँ बनकर उभरीं। यह आंदोलन स्त्री विमर्श को साहित्यिक मुख्यधारा में लाने का सशक्त माध्यम बना। मन्नू भंडारी की कहानियाँ, जैसे यही सच है, आखिरी फैसला, और उपन्यास आपका बंटी, नई कहानी आंदोलन की स्त्री चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं। आपका बंटी की नायिका शालिनी एक शिक्षित, जागरूक और आत्मनिर्भर स्त्री है जो पारिवारिक टूटन और मातृत्व के द्वंद्व को झेलती है। वह न केवल समाज के नियमों से जूझती है, बल्कि अपने स्व की खोज में भी निरंतर प्रयत्नशील रहती है।

कृष्णा सोबती की लेखनी में स्त्री की यौनिकता, अस्मिता और सामाजिक चेतना के गहन स्वर मिलते हैं। उनके उपन्यास मित्रो मरजानी में मित्रो का पात्र पारंपरिक सामाजिक ढाँचों को तोड़ते हुए स्त्री यौनिकता और स्वतंत्रता की खुली अभिव्यक्ति करता है। मित्रो जैसी नायिका उस समय के साहित्य में क्रांतिकारी मानी जाती है, जो न तो अपराधबोध से ग्रसित है और न ही झिझकती है। कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव जैसे लेखकों ने भी नई कहानी के माध्यम से स्त्री के भीतरी जीवन और सामाजिक स्थिति को गहराई से चित्रित किया। हालांकि इन पुरुष लेखकों की दृष्टि कभी–कभी स्त्री को अन्य के रूप में देखने की सीमाओं से ग्रस्त रही, फिर भी उन्होंने पारंपरिक भूमिकाओं को तोड़ने का प्रयत्न किया। उषा प्रियंवदा की कहानियाँ, जैसे वापसी, रूप–अरूप, स्त्री की आंतरिक संवेदनाओं, अकेलेपन और सामाजिक अपेक्षाओं के द्वंद्व को बहुत बारीकी से व्यक्त करती हैं। उनकी नायिकाएँ भावुक होते हुए भी निर्णय लेने में सक्षम और स्वतंत्रता के लिए संघर्षशील होती हैं। नई कहानी आंदोलन का विशेष महत्व इस बात में है कि इसने स्त्री को सामाजिक परिस्थितियों का निष्क्रिय शिकार नहीं माना, बल्कि उसे उन परिस्थितियों के विरुद्ध सोचने, समझने और प्रतिरोध करने की शक्ति से युक्त माना। स्त्री पात्र अब केवल निष्क्रिय संवेदनशील नहीं, बल्कि सक्रिय, बौद्धिक और आत्मविश्वासी बनने लगीं।

नई कहानी आंदोलन ने हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श को वैचारिक और संवेदनात्मक गहराई प्रदान की। इसने स्त्री के जीवन, यौनता, रिश्तों और उसकी पहचान के प्रश्नों को केन्द्र में लाकर साहित्य को नई दृष्टि और दिशा दी। इस आंदोलन ने हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के व्यापक और समावेशी स्वरूप को पुष्ट किया।

6. समकालीन कथा साहित्य में स्त्री विमर्श– समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श एक नई संवेदनशीलता, गहराई और विविधता के साथ उपस्थित होता है। इस दौर में स्त्री को केवल पारंपरिक भूमिकाओं में ही नहीं, बल्कि एक जटिल, बहुआयामी, आत्मसजग और सामाजिकदृराजनीतिक संदर्भों में क्रियाशील इकाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है। समकालीन लेखन स्त्री की देह, यौनता, अस्मिता, वर्ग, जाति और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से उसके अस्तित्व की व्यापक पड़ताल करता है। मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा, नासिरा शर्मा, अनामिका, गीतांजलि श्री, काशी नाथ सिंह और असगर वजाहत जैसे लेखकदृलेखिकाओं ने स्त्री पात्रों के माध्यम से उसकी सामाजिक जटिलताओं, आत्मसंघर्षों और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

प्रतिरोध को स्वर प्रदान किया है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'इदन्नमम', 'अल्मा कबूतरी' और 'झूला नट' में स्त्री देह, दलितता और सत्ता संबंधों की जटिलताओं को मुखर रूप से प्रस्तुत किया गया है। उनकी नायिकाएं यौनिकता और सामाजिक नैतिकताओं के बीच जूझती हुई स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करती हैं। प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' और उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में स्त्री की यौनिकता, अकेलापन, पुरुषवादी समाज की मानसिकता और स्त्री की आत्मनिर्भरता का गहन चित्रण मिलता है। उन्होंने समाज के उस हिस्से की ओर भी ध्यान आकर्षित किया, जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है जैसे आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हुए भी भावनात्मक शोषण की शिकार स्त्रियाँ।

मृदुला गर्ग की रचनाएँ जैसे 'चित्तकोबरा' और 'अनित्या' स्त्री की आत्मचेतना, कामना और उसकी स्वतंत्रता को विश्लेषित करती हैं। उन्होंने स्त्री को नैतिकता की पारंपरिक परिभाषाओं से बाहर निकालकर उसके अस्तित्व को खुद परिभाषित करने की कोशिश की। गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' में वृद्धावस्था की स्त्री, उसका आत्मबोध और सीमाओं को तोड़ने की चाह एक गहरे स्तर पर स्त्री विमर्श को पुनर्परिभाषित करती है। यह रचना भाषा, लिंग और राष्ट्र की सीमाओं को चुनौती देती है। इन लेखकों के अतिरिक्त, समकालीन कहानीकारों की रचनाओं में भी स्त्री विमर्श की नई परतें उभरती हैं। उदाहरणस्वरूप, अनामिका की कहानियों और कविताओं में स्त्री की दैहिक, मानसिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता के पक्ष में एक शक्तिशाली स्वर सुनाई देता है। समकालीन स्त्री लेखन में दलित और आदिवासी स्त्रियों की उपेक्षित आवाजें भी उभर रही हैं। बाबुराव बागुल, कौशल पंवार, सुधा अरोड़ा और रमणिका गुप्ता जैसी लेखिकाओं ने जातिगत और लैंगिक शोषण के दोहरे बोझ को उजागर किया है। इस कालखंड की विशेषता यह है कि यहाँ स्त्री को न केवल सामाजिक पीड़िता के रूप में चित्रित किया गया है, बल्कि वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हुई, अपने विकल्प स्वयं चुनने वाली और सामाजिक व्यवस्थाओं को चुनौती देती हुई नज़र आती है। निष्कर्षतः समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श एक बहुस्तरीय विमर्श के रूप में विकसित हुआ है, जो केवल लैंगिक समानता तक सीमित नहीं, बल्कि स्त्री के हर आयाम उसकी सोच, शरीर, आत्मा और सामाजिक रिश्तोंकृको समग्र रूप से सामने लाता है। यह विमर्श स्त्री को परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र वैचारिक और संवेदनात्मक सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

7. स्त्री के विविध रूप, मातृत्व, यौनता और अस्मिता– हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श के अंतर्गत स्त्री की पहचान को उसके बहुआयामी रूपों में देखा गया है, जिनमें मातृत्व, यौनता और अस्मिता जैसे पक्ष प्रमुख हैं। ये तीनों पक्ष स्त्री जीवन के ऐसे क्षेत्र हैं जो न केवल उसकी सामाजिक भूमिका को परिभाषित करते हैं, बल्कि उसकी चेतना, संघर्ष और स्वतंत्रता की भी अभिव्यक्ति करते हैं।

मातृत्व– मातृत्व को परंपरागत रूप से स्त्री की सर्वोच्च और पवित्र भूमिका के रूप में देखा गया है, लेकिन हिंदी कथा साहित्य ने इसे केवल एक जैविक भूमिका न मानकर सामाजिक और मानसिक अनुभव के रूप में चित्रित किया है। कृष्णा सोबती के उपन्यास मित्रो मरजानी में जहाँ स्त्री की यौन इच्छाओं को मुखर रूप से प्रस्तुत किया गया है, वहीं मातृत्व की भूमिका को भी एक बोझ और सामाजिक बंधन के रूप में देखा गया है। मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में मातृत्व एक ऐसे अनुभव के रूप में उभरता है, जो स्त्री के अस्तित्व और उसके आत्मबल का स्रोत भी हो सकता है, लेकिन जबरन थोपी गई मातृत्व की अवधारणा स्त्री को सामाजिक ढांचे में कैद भी कर देती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

यौनता– हिंदी कथा साहित्य में स्त्री यौनता का चित्रण एक समय तक वर्जित विषय रहा, लेकिन समकालीन लेखन ने इसे खुलकर प्रस्तुत किया है। यौनता स्त्री के अस्तित्व का महत्वपूर्ण पक्ष है, जिसे दबाकर या नकारकर उसे अधूरी पहचान दी जाती रही है। प्रभा खेतान के आत्मकथात्मक उपन्यास अन्या से अनन्या में स्त्री की यौन इच्छाओं और संबंधों को अत्यंत स्वाभाविक और मानवीय रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह स्त्री को केवल भोग्या या देवी की भूमिका से अलग एक इच्छाओं, जरूरतों और निर्णयों वाली इकाई के रूप में देखता है। मृदुला गर्ग की चितकोबरा और कट्टरता से विदा जैसी रचनाओं में स्त्री की यौन स्वायत्तता को एक प्रतिरोध के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अस्मिता– स्त्री अस्मिता का प्रश्न हिंदी कथा साहित्य में केंद्रीय विषय रहा है। अस्मिता न केवल उसकी पहचान से जुड़ी होती है, बल्कि यह उसकी चेतना, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति भी है। महादेवी वर्मा की आत्मकथात्मक रचनाओं में स्त्री की आंतरिक पीड़ा और अस्मिता की तलाश प्रमुख है। उषा प्रियंवदा की कहानियों में पढ़ी–लिखी, आत्मनिर्भर स्त्री पात्र अपने निर्णय स्वयं लेती हैं और पारिवारिक या सामाजिक मान्यताओं के सामने आत्मसमर्पण नहीं करतीं। इस अस्मिता की तलाश कभी–कभी विवाह संस्था, परिवार और समाज से टकराव में भी बदल जाती है। स्त्री के इन विविध रूपों को हिंदी कथा साहित्य ने जिस तरह से गहराई से चित्रित किया है, वह केवल साहित्यिक विकास नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना के बदलाव का भी संकेत है। स्त्री अब केवल त्याग और सहनशीलता का प्रतीक नहीं, बल्कि वह अपने अस्तित्व, इच्छाओं और अधिकारों के लिए सजग, संघर्षशील और सचेत है।

8. दलित और आदिवासी स्त्री विमर्श– दलित और आदिवासी स्त्री विमर्श ने भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, जो स्त्री विमर्श को न केवल पितृसत्ता के खिलाफ, बल्कि जातिवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ भी एक मजबूत प्रतिकार के रूप में प्रस्तुत करता है। यह विमर्श विशेष रूप से उन स्त्रियों की स्थिति और उनके संघर्षों को उजागर करता है, जिन्हें समाज की मुख्यधारा से बाहर रखा गया है। यहाँ पर स्त्री की पहचान केवल लिंग के आधार पर नहीं, बल्कि जाति, धर्म, और समाजिक स्थिति के संदर्भ में भी व्याख्यायित की जाती है। दलित स्त्री विमर्श ने भारतीय समाज में जातिवाद के भीतर स्त्री के स्थान को परिभाषित किया है। यह विमर्श उन दलित महिलाओं की आवाज़ को मुख्यधारा के विमर्श में स्थान देता है, जिन्हें न केवल पुरुषों द्वारा बल्कि उनके स्वयं के समाज और समुदाय के द्वारा भी बहिष्कृत किया गया है। दलित स्त्रियों को न केवल अपनी लैंगिक पहचान से जूझना पड़ता है, बल्कि उनकी जातीय पहचान भी उनके जीवन को कठिन बना देती है। डॉ. उमा चक्रवर्ती, मीरा देवी, सविता और कुमारी के लेखन ने दलित स्त्री के जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त किया है। इन लेखकों के साहित्य में दलित स्त्रियों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उत्पीड़न को चित्रित किया गया है, जहाँ वे पुरुषों और उच्च जातियों के शोषण के शिकार होती हैं। इन लेखकों का काम दलित स्त्रियों की राजनीति, उनके संघर्ष और उनकी स्वायत्तता को सामने लाता है। उदाहरणस्वरूप, डॉ. उमा चक्रवर्ती का 'दलित महिला का दृष्टिकोण' तथा मीरा देवी का 'मूल्य और संघर्ष' जैसे लेख दलित स्त्री के अनुभव को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

आदिवासी स्त्री विमर्श भी समान रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विमर्श आदिवासी महिलाओं के शारीरिक, मानसिक और सांस्कृतिक उत्पीड़न को सामने लाता है। आदिवासी समाज में स्त्री की स्थिति केवल एक गूढ़ विषय ही नहीं, बल्कि उनके अस्तित्व और संघर्ष की प्रतीक बन चुकी है। आदिवासी स्त्रियाँ न केवल पितृसत्ता से, बल्कि बाहरी समाज और सांस्कृतिक उपनिवेशवाद से भी संघर्ष करती हैं। आदिवासी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

समाज की विशेषताओं में उनके पारंपरिक जीवन, धरती के प्रति आस्था और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता शामिल है, जो बाहरी हमलों और सरकार की नीतियों से प्रभावित होती है। आदिवासी स्त्री के संघर्ष को समझने के लिए, लेखिका महाश्वेता देवी का साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। महाश्वेता देवी की कहानियाँ, जैसे 'हजार चौरासी की मां', आदिवासी स्त्रियों के संघर्षों, उनकी अस्मिता और उनका इतिहास दर्शाती हैं। वे आदिवासी महिलाओं की स्वायत्तता और उनके अधिकारों के लिए लड़ने की आवश्यकता पर बल देती हैं। इसके अलावा, वंदना शिवा, लीला साउथ, और कुमुदिनी कुमारी जैसी लेखिकाओं ने भी आदिवासी स्त्रियों के संघर्षों को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है।

यह विमर्श आदिवासी स्त्रियों की बहुआयामी पहचान को समझता है, जिसमें न केवल उनका लैंगिक उत्पीड़न शामिल है, बल्कि उनके अधिकारों की हनन, भूमि–अधिकार विवाद और उनके प्राकृतिक संसाधनों की लूट भी महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। आदिवासी स्त्री विमर्श का लक्ष्य सिर्फ स्त्री और पुरुष के बीच समानता लाना नहीं, बल्कि उनके पारंपरिक और सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा करना भी है।

दलित और आदिवासी स्त्री विमर्श का महत्व–

जातिवाद और पितृसत्ता के विरोध में संघर्ष, यह विमर्श दोनों ही समाजों की स्त्रियों की स्थिति को एक व्यापक दृष्टिकोण से समझता है। यह न केवल पितृसत्ता के खिलाफ है, बल्कि जातिवाद, सांप्रदायिकता और सामाजिक बहिष्कार के खिलाफ भी एक प्रतिकार करता है।

यथार्थ का चित्रण, दलित और आदिवासी स्त्री विमर्श ने स्त्रियों के जीवन के यथार्थ को समझने और दिखाने का प्रयास किया है। इन विमर्शों में स्त्री की स्थिति केवल शारीरिक शोषण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी मानसिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति को भी उजागर किया गया है।

समाज में न्याय की स्थापना, इन विमर्शों के द्वारा दलित और आदिवासी स्त्रियों के अधिकारों की पुनः स्थापना की जाती है। यह उनके सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की सुरक्षा की दिशा में काम करता है।

आधुनिक विमर्श के साथ एकीकृत दृष्टिकोण, दलित और आदिवासी स्त्री विमर्श अब केवल सामाजिक असमानता के विरोध में नहीं है, बल्कि यह अपने अस्तित्व और आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए भी एक बड़ा आंदोलन बन चुका है। यह एक इंटरसेक्शनल दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें जाति, लिंग, वर्ग और संस्कृति की जटिलताएँ एक साथ विश्लेषित की जाती हैं।

इस प्रकार, दलित और आदिवासी स्त्री विमर्श हिंदी कथा साहित्य में एक नई दिशा और विचारधारा लेकर आया है, जो न केवल एक उत्पीड़ित वर्ग की स्थिति को परिभाषित करता है, बल्कि समाज में समानता और न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी उठाता है।

9. समकालीन संदर्भ में स्त्री विमर्श की दिशा– समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श ने न केवल विषयवस्तु में विविधता प्राप्त की है, बल्कि उसकी भाषा, अभिव्यक्ति और वैचारिक गहराई में भी उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। अब यह विमर्श केवल लैंगिक असमानता या पितृसत्ता के विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्त्री के बहुआयामी अस्तित्व की जटिलताओं को समग्र रूप में सामने लाने का प्रयास करता है। वर्तमान स्त्री लेखन में स्त्रियाँ केवल पीड़ित या संघर्षशील पात्र नहीं हैं, वे अपने अस्तित्व, इच्छाओं, यौनिकता

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

और संबंधों के बारे में मुखर होकर बात करती हैं। मृदुला गर्ग की 'चित्तकोबरा', प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या', गीतांजलि श्री की 'रेत समाधि' तथा अनामिका, अलका सरावगी और मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियाँ स्त्री की आत्मचेतना, अस्मिता, संबंधों की जटिलता और भाषा की प्रयोगधर्मिता को नया विस्तार देती हैं। समकालीन स्त्री विमर्श अब वर्ग, जाति, क्षेत्र और यौनिकता के पारंपरिक द्वंद्वों से परे जाकर एक इंटरसेक्शनल दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें दलित, आदिवासी, मुस्लिम, किन्नर और ट्रांसजेंडर स्त्रियों की आवाजें भी प्रमुखता से उभर रही हैं। यह परिवर्तन स्त्री विमर्श को अधिक समावेशी और बहुस्तरीय बनाता है। जैसे– कावेरी दूबे, रचना यादव, संगीता बेंद्रे जैसी लेखिकाओं ने वंचित स्त्रियों की कहानियों को केंद्र में लाकर विमर्श के दायरे को व्यापक किया है।

वर्तमान समय में सोशल मीडिया, वेब लेखन और डिजिटल माध्यमों की उपस्थिति ने स्त्री विमर्श को नई गति और पहुँच प्रदान की है। ब्लॉग, पोडकास्ट, ऑनलाइन पत्रिकाओं और फ़ेमिनिस्ट वेबसाइटों के माध्यम से युवा लेखिकाएँ अपनी अस्मिता, अनुभव और विद्रोह को अभिव्यक्त कर रही हैं। इन माध्यमों ने अभिव्यक्ति के लोकतंत्रीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके साथ ही समकालीन स्त्री विमर्श ने भाषा के स्तर पर भी रूढ़ ढांचों को तोड़ने का प्रयास किया है। पारंपरिक स्त्रैण भाषा की जगह अब एक सशक्त, स्पष्ट और तीखी भाषा उभर रही है, जो स्त्री की मानसिक, शारीरिक और यौनिक चेतना को बेबाकी से अभिव्यक्त करती है। यौनिकता, मातृत्व, विवाहेतर संबंध, अकेलापन, वृद्धावस्था और आत्महत्या जैसे विषयों को अब कथा साहित्य में विमर्श के रूप में स्थान मिल रहा है। हालाँकि, इस नए विमर्श की आलोचना भी होती रही है। कई बार इसे अतिवादी, नग्नता की ओर झुका हुआ या पुरुषविरोधी करार दिया गया है। परंतु यह भी स्पष्ट है कि ये आलोचनाएँ स्वयं एक पितृसत्तात्मक संरचना से ग्रस्त दृष्टिकोण की देन हैं, जो स्त्री की स्वतंत्र आवाज से असहज हो उठती हैं।

अंततः समकालीन स्त्री विमर्श की दिशा अब केवल सामाजिक समानता की माँग नहीं करती, वह स्त्री के पूरे अनुभव–संसार को समझने और अभिव्यक्त करने की आकांक्षा रखती है। यह विमर्श स्त्री को किसी एक ढाँचे में नहीं बांधता, बल्कि उसे उसके संपूर्ण विविध रूपों में पहचानने और सम्मान देने का प्रयास करता है। हिंदी कथा साहित्य ने इस परिवर्तनशील और जटिल विमर्श को यथोचित स्थान देकर साहित्य को अधिक प्रासंगिक, जागरूक और जीवंत बनाया है।

निष्कर्ष– हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण और विचारशील क्षेत्र बन चुका है, जिसने समाज में स्त्रियों की स्थिति, उनके अधिकार और उनके संघर्षों को नई दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इस विमर्श ने भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक संरचना को चुनौती दी है और स्त्री के भीतर की शक्ति, आत्मनिर्भरता, और संघर्ष को प्रमुख रूप से सामने लाया है। स्त्री विमर्श ने न केवल भारतीय समाज में लैंगिक समानता की आवश्यकता को उजागर किया, बल्कि यह भी दिखाया कि स्त्री के अस्तित्व को केवल पुरुष के परिप्रेक्ष्य से नहीं, बल्कि उसकी स्वायत्तता, उसकी इच्छाओं और उसकी स्वतंत्रता से समझना चाहिए। स्त्री के अनुभवों को, विशेष रूप से उसकी मानसिकता, शारीरिक और सामाजिक स्थिति को, अधिक गहराई से और विस्तृत रूप से व्याख्यायित किया गया है।

निष्कर्षस्वरूप, हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श ने समाज के अंतर्निहित असमानताओं को चुनौती दी है और यह सिद्ध किया है कि स्त्री का संघर्ष केवल पितृसत्ता के खिलाफ नहीं, बल्कि जातिवाद, वर्गभेद

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 03, March 2022

और सांस्कृतिक दमन के खिलाफ भी है। इस विमर्श ने स्त्री को अपनी आवाज़, अपनी पहचान और अपनी स्वतंत्रता के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया है। भविष्य में भी इस विमर्श को और अधिक व्यापक, समावेशी और बहुआयामी रूप में विकसित किया जा सकता है, ताकि समाज में स्त्री के समान अधिकार और सम्मान की दिशा में और प्रगति हो सके।

संदर्भ सूची –

प्रेमचंद, सेवासदन, निर्मला, गबन

मन्नू भंडारी, एक इंच मुस्कान, महाभोज

कृष्णा सोबती, मित्रो मरजानी, जिंदगीनामा

मृदुला गर्ग, चितकोबरा, कठगुलाब

मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, चाक

प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, अन्या से अनन्या

बबीता रैना, दलित स्त्री का प्रतिरोध

Anita Bharti – Shabd aur Smritiyan

नंदिता साहा, स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य

सुशीला टाकभौरे, दलित स्त्री लेखन की चुनौतियाँ

Simone de Beauvoir – The Second Sex

Judith Butler – Gender Trouble

Meenakshi Moon & Urmila Pawar – We Also Made History

उमा चक्रवर्ती, Gendering Caste

निर्मला जैन, हिंदी कहानी का विकास

निर्मला भुराड़िया, हिंदी में नारी चेतना

रमणिका गुप्ता, आपहुद की कहानियाँ

Geetanjali Shree – Ret Samadhi